दिनांक 29 अप्रैल 2017 को श्री षणमुखानन्द चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती ऑडिटोरियम, किंग्स सर्किल, सायन, मुंबई में आयोजित ''सुमन कल्याणपुर के अभिनंदन समारोह'' में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय लोक सभा अध्यक्ष जी का भाषण

1. आज यहां निष्णात एवं प्रख्यात सुर–साधिका 'सुमन कल्याणपुर' को सम्मानित करने के समारोह में इस मंच पर उपस्थित होकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। सुमन जी ने जीवन के 80वें बसन्त में प्रवेश कर लिया है। वे स्वस्थ रहें एवं दीर्घायु हों।

2. ऐसी समर्पित संगीत की गायिका का सम्मान वास्तव में उन भारतीय सभ्यता, संस्कृति और मौलिक मूल्यों का सम्मान है जो हमें रचनाशीलता, सृजनात्मकता और अनूठा नवीन प्रयोग करने की प्रेरणा देते हैं। संगीत के माध्यम से जीवन के हर भाव की अभिव्यक्ति होती है। Music is divine and संगीत की साधना ईश्वर की भक्ति है। वात्सल्य, श्रृंगार, भक्ति, विरह–विषाद, हर्ष–उल्लास, देशभक्ति, श्रद्धा इत्यादि विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति भाषा संगीत ही है। भाषा, धर्म, जाति, उम्र, राज्य, देश–प्रदेश की सीमाओं से परे संगीत सबके मन को लुभाता है और संगीत लोगों को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। संगीत साधना भारतीय संस्कृति का अटूट अंग है और हम भारतीयों की जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है। नारद संहिता में कहा गया है:–

''नाहं वसामि बैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।

मद्भक्ताः यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारदः।।''

(हे नारद्! न तो मैं बैकुंठ में रहता हूं और न योगियों के हृदय में, मैं तो वहां निवास करता हूं, जहां मेरे भक्त–जन कीर्तन करते हैं।)

धर्म से ऊपर उठकर उस महाशक्ति को समर्पित साधना ही संगीत है। वास्तव में, संगीत और कला का आध्यात्मिकता से गहरा संबंध है।

3. भारतीय संगीत की परम्परा अत्यन्त गौरवपूर्ण एवं महान है। भारतीय संगीत परम्परा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण सामवेद है। इससे यह भी पता चलता है कि संगीत कैसे आम आदमी के दैनिक जीवन का महत्वपूर्ण एवं अभिन्न हिस्सा था। हमारे गौरवपूर्ण संगीत के इतिहास में तानसेन, बैजू बावरा का नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। साथ ही, भक्ति काल के भजन हों अथवा रवीन्द्र संगीत, सभी भारतीय परम्परा का हिस्सा रहे हैं। लोक संगीत की परम्परा भारत में उतनी ही पुरानी है जितना मानवता का इतिहास।

4. संगीत का जीवन में इतना सकारात्मक प्रभाव हो सकता है कि research यह बताती है कि संगीत विभिन्न रोगों के उपचार में अत्यन्त उपयोगी है। Music Therepy की लोकप्रियता सम्पूर्ण विश्व में तेजी से बढ़ रही है। **मैं दुनिया में जहां भी गई हूं, वहां मैंने पाया है कि विदेशियों में भी भारतीय संगीत के प्रति जो लोकप्रियता, अपनापन और आकर्षण है, वह देखने योग्य है।**

5. सन् 50 से 60 का दशक भारतीय संगीत के उत्थान का स्वर्णिम काल था। इस दशक में लिखे गए, संगीतबद्ध हुए एवं गाए हुए सभी गीतों ने सफलता के शिखर को छुआ। इस काल खंड में एक से एक बेहतरीन गीतकार, संगीतकार एवं गायकों की मौजूदगी थी। लिखे गए स्तरीय गीतों को प्रख्यात संगीत साधकों द्वारा संगीतबद्ध किया गया जिसे उस दौर के गायकों ने खूबसूरती से गाया और वे गाने बहुत लोकप्रिय हुए। कई गीतों ने तो सफलता के सारे कीर्तिमान स्थापित किए। **गानों के बोल सरल एवं भावपूर्ण हुआ करते थे, संगीत सुमधुर था, इसलिए गीत सदाबहार बन पड़े।**

6. संगीत के ऐसे स्वर्णिम युग में किसी भी नवागंतुक के लिए अपना स्थान बनाना आसान नहीं था। ऐसे सुरीले दशक एवं संगीत के स्वर्णकाल में एक गायिका ने न केवल प्रवेश किया और अपनी सुरमयी आवाज़ से संगीत जगत में अपनी सम्मानजनक उपस्थिति दर्ज कराई और संगीतप्रेमियों के दिलों में हमेशा के लिए अपना एक सम्मानपूर्ण स्थान सुरक्षित कर लिया। ऐसी ही सुमधुर, सुरीली, सौम्य एवं गरिमापूर्ण सुमन जी को सम्मानित करने के लिए आज हम यहां उपस्थित हुए हैं। कहते हैं कि कला नैसर्गिक होती है। परिश्रम और अनुशासन से उसे और तराशा जा सकता है। सुमन जी भी एक नैसर्गिक कलाकार हैं और जो कई विधाओं में प्रवीण हैं। तभी यह संभव हो सका कि एक व्यक्ति जिसकी बचपन में पेंटिंग में रूचि थी और जिसका शास्त्रीय संगीत की कोई औपचारिक शिक्षा बचपन में नहीं प्राप्त हुई थी, वे उस दौर में भारतीय संगीत में गौरवपूर्ण

स्थान बना सकीं, प्रथम पंक्ति में आ सकीं। यह नैसर्गिक प्रतिभा से ही संभव है।

7. सुमन जी की आवाज़ अत्यन्त सुरीली, मधुर एवं पतली है। अपनी मखमली एवं सुरीली आवाज़ में सरलता से गाने का जो उनका तरीका था, उससे सुगम संगीत (Light Music) को व्यापक स्तर पर प्रसिद्धि मिली। यह खुशी की बात है कि अब लोग सुगम संगीत को भी एक serious art मानने लगे हैं। यह कहा जा सकता है कि जन–जन का गीत है–सुमन जी का सुगम संगीत। गाना इतना सुगम हो सकता है, यह बनाने वाली सुमन ही हैं। **सुर, सुमधुर, सुमन का सुगम संगीत, यह सुरीला सुसंयोग है।**

8. उनकी आवाज़ में जो कशिश है, वह अतुलनीय है। उनकी versatility का नमूना देखिए, विविध प्रकार के गीतों को उन्होंने बड़ी कुशलता के साथ गाया है। चाहे ''चले जा चले जा जहां प्यार मिले (**जहां प्यार मिले**)'' जैसा नोंक–झोंक वाला गीत हो, या ''पर्वतों के पेड़ों पर शाम का बसेरा है (**शगुन**)'' जैसे रोमांटिक बोल, अथवा ''बाद मुद्दत के ये घड़ी आई है (**जहांआरा**)'' जैसी खूबसूरत गज़ल या ''अजहूं ना आये बालमा, सावन बीता जाए (**सांझ और सवेरा**)'' जैसा शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत। ''यूं ही दिल ने चाहा था रोना रूलाना (**दिल ही तो है**)'' जैसे विरह गीत भी आपने गाए। मैं ये कहूंगी कि आपने हर विधा के गीत गाए हैं। नूर महल फिल्म का गीत ''मेरे महबूब ना जा, आज की रात न जा.....'' आज भी श्रोताओं के बीच उतना ही लोकप्रिय है जितना पहले था। एक गीत

''बहना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा हैं, रेशम की डोर से संसार बांधा है'' तो रक्षा बंधन त्यौहार का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है और रक्षा बंधन के दिन हर रेडियो स्टेशन एवं टी.वी. चैनल पर यह गीत अवश्य बजता है।

9. उन्होंने अपने समय के सभी प्रसिद्ध पार्श्वगायकों के साथ मिलकर सुमधुर और कर्णप्रिय गाने गाएं। उनके हिन्दी गीत की जितनी लोकप्रियता है उतनी ही लोकप्रियता मराठी भाषा में गाए गीतों की हैं। मराठी भाषा में गाए उनके गीत ''जिथे सागरा धरणी मिळते तिथे तुझी मी वाट पाहाते'', ''बाई बाई मन मोराचा कसा पिसारा फुलला'' और ''अरे, संसार संसार जसा तवा चुल्ह्यावर....'' इत्यादि आज भी उतने ही कर्णप्रिय एवं प्रसिद्ध हैं। उनके द्वारा मराठी में गाए गए भाव गीत सदाबहार हैं, जैसे ''ओ केशवा ओ माधवा, तुझा नावात रे गोड़ावा'', ''वकुलीचा फूलपरी कौशल्येचा राम'', ''नंदा घरी नंदन वन फुलले'' और ''सावल्या विट्ठला तुझ्या दारी आले'' इत्यादि। बंगाली भाषा में उनके द्वारा गाए गीत ''मोने कोरो एमी नेई'', ''दुरे थेको ना'', ''आमार सपनो देखार दुती नयन'', ''तोमार आकाश थेके.....'' भी उतने ही लोकप्रिय हैं।

10. आज यहां मंच पर मराठी संगीत के सितारे एवं प्रख्यात संगीतकार अशोक पत्की जी भी उपस्थित है जिनके संगीत निर्देशन में सुमन जी को गाने का मौका मिला। अशोक जी ने सुमन कल्याणपुर द्वारा गाए गए भक्ति गीतों के अलबम ''गानी–एकदाच यावे साख्या'' के रचयिता के रूप में अपना करियर प्रारंभ किया और बाद में उन दोनों ने एक साथ कई स्टेज

शो किया। अशोक पत्की जी का नाम आते ही लोकप्रिय गीत ''मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा....'' की याद आ जाती है। कैसे संगीत के सुर देश की आवाज़ बन जाते हैं।

11. व्यक्तिगत तौर पर मैं मानती हूं कि किसी भी गायक के लिए श्रोताओं का प्यार एवं सम्मान ही महत्वपूर्ण होता है। आज भी उनके गाने को पसन्द करने वाले देश–विदेश के श्रोताओं का स्नेह और उनके द्वारा की गई प्रशंसा ही उनके लिए वास्तव में उनका सम्मान एवं उनके लिए सच्चा पुरस्कार है।

12. सुमन जी ने गायकी के साथ–साथ अपने परिवार की पूरी जिम्मेदारी को भी बखूबी निभाया। जिस प्रकार उनके द्वारा गाए गीत मधुर हैं, यही गुण उनकी चित्रकारी में भी उजागर होता है। paintings के शौक को आज भी सुमन जी ने बरकरार रखा है। उनका व्यक्तित्व, उनकी गायकी की तरह सौम्य, गौरवपूर्ण और विवादरहित रहा है और उन्होंने अपने जीवन में अपने हुनर, अपने उत्तरदायित्व के बीच सफल सामंजस्य स्थापित किया था। उन्होंने एक कुशल जीवनसंगिनी, एक अच्छी माता के रूप में, कुशल गृहिणी के रूप में अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। **हमारे यहां नारी की कल्पना देवी से की जाती है। सुमन कल्याणपुर जी के व्यक्तित्व में अन्नपूर्णा, सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के गुणों का सटीक सम्मिश्रण है और उन्होंने गायक के रूप में अपने करियर को भी कभी पारिवारिक दायित्वों से ऊपर नहीं रखा।**

13. सुमन कल्याणपुर जी ने अपनी प्रतिभा से न सिर्फ सबको चकित किया। बहुत सफल एवं प्रसिद्ध होने के बावजूद उनमें विनम्रता एवं उदारता जैसे गुण विद्यमान हैं। संगीत के स्वर्णिम काल में सुमन जी ने अपने लिए सम्मानजनक स्थान हासिल किया और भले ही हम यह कह सकते है कि अनेक कलाकारों ने उनसे ज्यादा सफल गीत दिए हों, ज्यादा संख्या में गीत गाए हों लेकिन सुमन जी के प्रशंसकों का एक अलग वर्ग है जो उनकी गायकी, आवाज़ एवं सुरों की प्रशंसा और सम्मान देता है। मुझे यहां एक प्रसिद्ध फिल्म समीक्षक जी द्वारा सुमन जी के लिए कही गई बात याद आ रही हैं कि अनेक गायक–गायिकाओं ने बहुत बड़ी संख्या में लोकप्रिय एवं सफल गीत गाए लेकिन सफलता एवं लोकप्रियता के पैमाने की तुलना में सुमन जी की गायकी ने सुरों के माधुर्य, आवाज़ के सुरीलेपन एवं भावों की अभिव्यक्ति के पैमाने पर निरंतर एक उच्च स्तर को बनाए रखा है। उनकी यही विशिष्टता फिल्म समीक्षकों एवं उनके प्रशंसकों की नज़र में उन्हें श्रेष्ठतम एवं औरों से अलग बना देती है और इसलिए संख्या में कम गीत होने के बावजूद सुमनजी की गिनती श्रेष्ठ गायकों में होती है और हमेशा रहेगी।

14. मैं सुमन कल्याणपुर जी को एक बार पुनः स्वस्थ एवं संगीतमय जीवन की प्रार्थना करती हूं। साथ ही, यह आशा करती हूं कि ऐसी ही कड़ी तपस्या और संगीत साधना करने की प्रेरणा आने वाली पीढ़ियों को दें। मुझे विश्वास है कि उनका आशीर्वाद से संगीत की नई पौध को अत्यधिक प्रेरणा एवं सम्बल मिलेगा। इस कार्यक्रम में आए सभी बन्धु एवं भगिनियों सहित

सभी सम्माननीय जनों का पुनः अभिनंदन करती हूं और आपके द्वारा गाए गए इस लोकप्रिय गीत से अपनी बात समाप्त करती हूं।

"रहे ना रहे हम, महका करेंगे बन के कली

बन के सबा, बागे वफा में .....।।"

धन्यवाद।

———